सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुण्डरीकेक्षणं
हृत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवर्तितमसौ श्रीवल्भार्कोऽवतात्।।

श्री भारतमार्तण्डमहाभागाः।

निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्रीमन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।

प्रति 1,00,000 {न्योछावर 6/– रुपया}

निवेदन

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामितिलकायित श्री 108 श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के अन्त में श्रीमहाप्रभु जी के उपदेश प्रकाशित किये हैं। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मंगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष

विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.nathdwaratemple.org के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
1	सोम	31	मार्च, सन् 2014 संवत्सरोत्सवः। इष्टिः।
2	मंगल	1	अप्रेल
3	बुध	2	गणगौरी।
4	गुरू	3	
5	शुक्र	4	
6	शनि	5	श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव। (1615)
7	रवि	6	
8	सोम	7	
9	मंगल	8	रामनवमी व्रतम्।
10	बुध	9	रामनवमी व्रत की पारणा।
10	गुरू	10	
11	शुक्र	11	कामदा एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई।
12	शनि	12	
13	रवि	13	
14	सोम	14	मेष संक्रान्ति। सतुआ गोपीवल्लभ या राजभोग में पुण्यकाल आज सूर्योदय से लेके मध्याह्न पर्यन्त है तामे भी सूर्योदय के पास के दो घंटा अति मुख्य पुण्यकाल है। अबके यह संक्रान्ति आज प्रातः 7 बजके 38 मिनिट पे बैठी है तासूं पुण्य काल आज मान्यो जायगो। श्री कूं भोग धरे पीछे दान श्राद्धादि करने।
15	मंगल	15	

वल्लभाब्द 536–537			**वैशाख (गु.चैत्र) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	बुध	16	इष्टिः।
2	गुरू	17	
3	शुक्र	18	
4	शनि	19	
5	रवि	20	
7	सोम	21	श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सवः।
8	मंगल	22	
9	बुध	23	
10	गुरू	24	पांच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री 108 श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत।
11	शुक्र	25	वरूथिनी एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्यजी (श्री महाप्रभुजी) को उत्सव। (1535) श्री वल्लभाब्द 537 को प्रारम्भ।
12	शनि	26	
13	रवि	27	
14	सोम	28	
30	मंगल	29	इष्टिः।

वल्लभाब्द 537	**वैशाख शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	बुध	30	
2	गुरू	1	मई
3	शुक्र	2	अक्षय तृतीया चन्दन यात्रा त्रेतायुगादि जलकुम्भ दानम्।
4	शनि	3	
5	रवि	4	
6	सोम	5	
7	मंगल	6	तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (1690)
8	बुध	7	
9	गुरू	8	
10	शुक्र	9	
11	शनि	10	मोहिनी एकादशी व्रतम् ।
12	रवि	11	
13	सोम	12	
14	मंगल	13	श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम् ।
15	बुध	14	

वल्लभाब्द 537	ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	गुरू	15	इष्टिः
2	शुक्र	16	चार स्वरूप को उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत।
3	शनि	17	
4	रवि	18	
5	सोम	19	
6	मंगल	20	
7	बुध	21	
9	गुरू	22	
10	शुक्र	23	
11	शनि	24	अपरा एकादशी व्रतम्।
12	रवि	25	आज सूं ले के ज्येष्ठ शुक्ल 10 रवि पर्यन्त सूर्य कूं रोहिणी नक्षत्र है तासूं इन दिनन में श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है।
13	सोम	26	
14	मंगल	27	
30	बुध	28	

वल्लभाब्द 537			**ज्येष्ठ शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	गुरू	29	इष्टिः।
2	शुक्र	30	
3	शनि	31	
4	रवि	1	जून
4	सोम	2	
5	मंगल	3	श्री के नाव को मनोरथ।
6	बुध	4	
7	गुरू	5	
8	शुक्र	6	
9	शनि	7	
10	रवि	8	श्री गंगादशमी दशहरा श्री यमुनाजी को उत्सव माने हे।
11	सोम	9	निर्जला एकादशी व्रतम्।
12	मंगल	10	
13	बुध	11	तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव। (1900)
14	गुरू	12	स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो।
15	शुक्र	13	ज्येष्ठाभिषेक (स्नानयात्रा)। इष्टिः।

वल्लभाब्द 537	आषाढ़ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	शनि	14	
3	रवि	15	
4	सोम	16	
5	मंगल	17	
6	बुध	18	
7	गुरू	19	
8	शुक्र	20	
9	शनि	21	
10	रवि	22	
11	सोम	23	योगिनी एकादशी व्रतम्।
12	मंगल	24	
13	बुध	25	
14	गुरू	26	
30	शुक्र	27	तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (1825)

तिथि	वार	दि.	उत्सव
1	शनि	28	इष्टिः।
2	रवि	29	
3	सोम	30	रथयात्रा।
4	मंगल	1	जुलाई
5	बुध	2	श्री द्वारकाधीशजी को पाटोत्सव।
6	गुरू	3	कसूंभा छट्ठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी विराजे सो उत्सव तथा तिलकायित श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज गादी विराजे।(2057)
7	शुक्र	4	
8	शनि	5	
8	रवि	6	
9	सोम	7	
10	मंगल	8	
12	बुध	9	देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्यनियमारम्भः ।
13	गुरू	10	
14	शुक्र	11	
15	शनि	12	पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्यनियमारम्भः एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य।

वल्लभाब्द 537	**श्रावण (गु. आषाढ़) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	रवि	13	इष्टिः। हिन्दोलारम्भः।
2	सोम	14	
4	मंगल	15	श्री चन्द्रमाजी को पाटोत्सवः।
5	बुध	16	
6	गुरू	17	
7	शुक्र	18	
8	शनि	19	जन्माष्टमी की बधाई
9	रवि	20	
10	सोम	21	तिलकायित श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज को उत्सव हांडी उत्सव। (1763)
11	मंगल	22	कामिका एकादशी व्रतम्।
12	बुध	23	
13	गुरू	24	
14	शुक्र	25	
30	शनि	26	हरियाली अमावस।

वल्लभाब्द 537	**श्रावण शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	रवि	27	इष्टिः।
1	सोम	28	
2	मंगल	29	
3	बुध	30	ठकुरानी तीज मधुस्त्रवा।
4	गुरू	31	
5	शुक्र	1	अगस्त, नाग पंचमी।
6	शनि	2	
7	रवि	3	
8	सोम	4	
9	मंगल	5	सात स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित 108 श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
10	बुध	6	
11	गुरू	7	पुत्रदा एकादशी व्रतम् पवित्रारोपणं सायं उत्थापन में याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरायवे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित 108 श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
12	शुक्र	8	गुरुन कूं पवित्रा धरावने।
13	शनि	9	श्री विट्ठलेशरायजी महाराज को उत्सव। (1657), चतुर्दशी को क्षय होयवे सूं आज।
15	रवि	10	रक्षा बन्धनं सायं उत्थापन में, गुसांईजी के ज्येष्ठ पुत्र श्रीगिरधरजी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव (1632) आपस्तम्ब हिरण्यकेशीय बौधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति, ऋग्वेदीन, सर्व यजुर्वेदीन तथा अथर्ववेदीनं की श्रावणी।

वल्लभाब्द 537	**भाद्रपद (गु. श्रावण) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	सोम	11	इष्टिः। गोस्वामि तिलकायित श्री 108 श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज को उत्सव।(1917) हेमहिन्दोला।
2	मंगल	12	हिन्दोला विजय।
3	बुध	13	कज्जली तीज।
4	गुरू	14	
5	शुक्र	15	
6	शनि	16	शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णुस्वामि प्राकट्योत्सव। सप्तमी को क्षय होयवे सूं आज।
8	रवि	17	जन्माष्टमी व्रतम्।
9	सोम	18	नन्दमहोत्सव।
9	मंगल	19	
10	बुध	20	
11	गुरू	21	अजा एकादशी व्रतम्।
12	शुक्र	22	
13	शनि	23	
14	रवि	24	काका वल्लभजी को उत्सव। (1703)
30	सोम	25	सोमवती अमावस। कुश ग्रहणी अमावस।

वल्लभाब्द 537	भाद्रपद शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	मंगल	26	इष्टिः। राधाष्टमी की बधाई।
2	बुध	27	
3	गुरू	28	सामवेदीन की श्रावणी।
4	शुक्र	29	गणेश चतुर्थी।
5	शनि	30	ऋषि पंचमी। द्वितीय स्वरूपोत्सव।
6	रवि	31	तिलकायित श्री विट्ठलेशजी महाराज को उत्सव।(1744)
7	सोम	1	सितम्बर
8	मंगल	2	राधाष्टमी ।
9	बुध	3	
10	गुरू	4	
11	शुक्र	5	नवलक्ष ग्रन्थकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव। (1714) परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी)
12	शनि	6	वामन द्वादशी
13	रवि	7	
14	सोम	8	
15	मंगल	9	सांझी को आरम्भः। श्राद्धपक्ष का आरम्भ। ताको निर्णय पृष्ठ (26) एवं श्राद्ध का संकल्प पृष्ठ (27) पर लिख्यो है। इष्टिः।

वल्लभाब्द 537			**आश्विन (गु. भाद्रपद) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
2	बुध	10	
3	गुरू	11	
4	शुक्र	12	
5	शनि	13	श्री हरिरायजी को उत्सव। (1647)
6	रवि	14	
7	सोम	15	
8	मंगल	16	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरूषोत्तमजी को उत्सव। (1587)
9	बुध	17	
10	गुरू	18	
11	शुक्र	19	इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)।
12	शनि	20	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव। (1567)
13	रवि	21	श्री गुसांईजी के तीसरे लालजी श्रीबालकृष्णजी को उत्सव। (1606)
13	सोम	22	
14	मंगल	23	सर्वपितृ अमावस,
30	बुध	24	मातमह श्राद्ध, कोटकी आरती और सांझी की समाप्ति।

वल्लभाब्द 537	आश्विन शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द 2071
तिथि	वार	दि.	उत्सव
1	गुरू	25	इष्टिः। नवरात्रारम्भः।
2	शुक्र	26	
3	शनि	27	
4	रवि	28	श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) (1854)
5	सोम	29	
6	मंगल	30	
7	बुध	1	अक्टूबर, सरस्वती पूजनारम्भः।
8	गुरू	2	
9	शुक्र	3	दशहरा (विजया दशमी)
10	शनि	4	सरस्वती विसर्जनम्। श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव।
12	रवि	5	पाशांकुशा एकादशी व्रतम्।
13	सोम	6	श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः।
14	मंगल	7	शरद पूर्णिमा (रासोत्सवः)।
15	बुध	8	कार्तिक स्नानारम्भः खग्रास चन्द्रग्रहण नाथद्वारा में अदृश्य।

वल्लभाब्द 537			**कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	गुरू	9	इष्टिः
2	शुक्र	10	
3	शनि	11	
4	रवि	12	
5	सोम	13	
6	मंगल	14	
7	बुध	15	
8	गुरू	16	
9	शुक्र	17	
10	शनि	18	
11	रवि	19	रमा एकादशी व्रतम्।
12	सोम	20	
13	मंगल	21	धनतेरस।
14	बुध	22	रूप चतुर्दशी (अभ्यंग)
30	गुरू	23	दीपोत्सव (दीपावली) हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्) कान जगाई। खण्डग्रास सूर्यग्रहण भारतवर्ष में अदृश्य

वल्लभाब्द 537			**कार्तिक शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	शुक्र	24	इष्टिः। अन्नकूटोत्सवः। गोवर्द्धनपूजा। गुर्जराणां 2071 वर्षारम्भः।
2	शनि	25	यम द्वितीया।
3	रवि	26	
4	सोम	27	
5	मंगल	28	
6	बुध	29	
7	गुरू	30	श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव गो. ति. 108 श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत। (2063)
8	शुक्र	31	गोपाष्टमी।
9	शनि	1	नवम्बर, अक्षय नवमी। कृत युगादि कूष्माण्डदानम्।
10	रवि	2	
11	सोम	3	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं सायं संध्या में
12	मंगल	4	श्री गुसांईजी के प्रथम लालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (1597) तथा पंचमलालजी श्री रघुनाथजी को उत्सव। (1611)
13	बुध	5	ति.श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (1876) चतुर्दशी को क्षय होयवे सूं आज।
15	गुरू	6	चार स्वरूप को उत्सव। नित्यलीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री 108 श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत। चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्ति। गोपमासारम्भः।

वल्लभाब्द 537	**मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	शुक्र	7	इष्टिः ।(व्रतचर्या) अथवा गोपमासारम्भः ।
2	शनि	8	
3	रवि	9	
4	सोम	10	छः स्वरूप को उत्सव तिलकायित श्री दाऊजी महाराज कृत।
5	मंगल	11	
6	बुध	12	
7	गुरू	13	गो.ति. 108 श्री गोविन्दलालजी महाराज को उत्सव ।(1984)
7	शुक्र	14	
8	शनि	15	श्री गुसांईजी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव। (1599)
9	रवि	16	
10	सोम	17	
11	मंगल	18	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्।
12	बुध	19	श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निज मन्दिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. 108 श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत (2063)
13	गुरू	20	श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (1628)
14	शुक्र	21	
30	शनि	22	

वल्लभाब्द 537		**मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	रवि	23	इष्टिः।
2	सोम	24	
3	मंगल	25	
4	बुध	26	
5	गुरू	27	श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सवः।
7	शुक्र	28	श्री गुसांईजी के चतुर्थलालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (1608)
8	शनि	29	सात स्वरूप को उत्सव श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज कृत।
9	रवि	30	श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई।
10	सोम	1	दिसम्बर
11	मंगल	2	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
12	बुध	3	
13	गुरू	4	
14	शुक्र	5	
15	शनि	6	छप्पन भोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है। गोपमास समाप्ति।

वल्लभाब्द 537	पौष (गु. मार्गशीर्ष) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	रवि	7	इष्टिः। नित्यलीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री 108 श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव। (2005)
2	सोम	8	
3	मंगल	9	
4	बुध	10	
5	गुरू	11	
6	शुक्र	12	
7	शनि	13	श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव। (1625)
8	रवि	14	
8	सोम	15	
9	मंगल	16	श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्ठलनाथजी को उत्सव। (1572) धनुर्मासारम्भः।
10	बुध	17	
11	गुरू	18	सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव। (1769)
12	शुक्र	19	
13	शनि	20	
14	रवि	21	गोस्वामि तिलक श्री 108 श्री इन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) महाराज के पुत्र **चि.गो.श्री भूपेश कुमारजी (श्री विशाल बावा)** को जन्मदिन। (2037) अमावस्या को क्षय होयवे सूं आज।

वल्लभाब्द 537 **पौष शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द 2071

तिथि	वार	दि.	उत्सव
1	सोम	22	इष्टिः।
2	मंगल	23	
3	बुध	24	
4	गुरू	25	
5	शुक्र	26	
6	शनि	27	नित्यलीलास्थ गो.श्री 108 श्री दामोदरलालजी महाराज को उत्सव। (1953)
7	रवि	28	
8	सोम	29	
9	मंगल	30	
10	बुध	31	
11	गुरू	1	जनवरी सन् 2015 को प्रारम्भः। पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
12	शुक्र	2	
13	शनि	3	
14	रवि	4	
15	सोम	5	माघ स्नानारम्भः। इष्टिः।

वल्लभाब्द 537	माघ (गु. पौष) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	मंगल	6	
2	बुध	7	
3	गुरू	8	
4	शुक्र	9	
5	शनि	10	
6	रवि	11	
7	सोम	12	
8	मंगल	13	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव। (1711)
9	बुध	14	भोगी, धनुर्मास की समाप्ति।
10	गुरू	15	मकर संक्रान्ति। तिलवा गोपीवल्लभ में ता पीछे दान श्राद्धादि करने। अबके यह संक्रांति 9 बुध कूं रात्रि के 7 बजके 28 मिनिट पे बैठे हैं। तांसू पुण्यकाल आज सूर्योदय से लेके दिन के 3 बजके 23 मिनिट पर्यन्त है। तामे भी सूर्योदय के पास के 2 घंटा अति मुख्य पुण्यकाल है। उत्तरायण।
11	शुक्र	16	षट्तिला एकादशी व्रतम्। तिलकी वस्तु अवश्य भोग धरनो तिल के दान भक्षणादि करने।
12	शनि	17	
13	रवि	18	
14	सोम	19	
30	मंगल	20	

वल्लभाब्द 537			**माघ शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	बुध	21	इष्टिः।
2	गुरू	22	
3	शुक्र	23	श्री मुकुन्दरायजी को पाटोत्सव। चतुर्थी को क्षय होयवे सूं आज।
5	शनि	24	बसन्त पंचमी।
6	रवि	25	
7	सोम	26	
8	मंगल	27	
9	बुध	28	
10	गुरू	29	
11	शुक्र	30	जया एकादशी व्रतम्।
12	शनि	31	
13	रवि	1	फरवरी
14	सोम	2	
15	मंगल	3	माघ स्नान समाप्तिः। होरीडांडो दण्डारोपणं आज सूर्यास्तानन्तरं सायं 6 बजके 20 मिनिट के पश्चात् यही समय धमार को आरम्भ। रोपणी को उत्सव।

वल्लभाब्द 537	**फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	बुध	4	इष्टिः।
2	गुरू	5	
2	शुक्र	6	
3	शनि	7	
4	रवि	8	
5	सोम	9	
6	मंगल	10	
7	बुध	11	श्रीनाथजी को पाटोत्सवः।
8	गुरू	12	
9	शुक्र	13	
10	शनि	14	
11	रवि	15	विजया एकादशी व्रतम्।
12	सोम	16	
13	मंगल	17	
14	बुध	18	

वल्लभाब्द 537			फाल्गुन शुक्लपक्षः विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	गुरू	19	इष्टिः।
2	शुक्र	20	
3	शनि	21	
4	रवि	22	
5	सोम	23	
6	मंगल	24	
7	बुध	25	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। गोस्वामि तिलकायित 108 **श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी)** महाराज को जन्मदिन।(2006)
8	गुरू	26	होलिकाष्टकारम्भः।
9	शुक्र	27	
10	शनि	28	
11	रवि	1	मार्च, आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्।
12	सोम	2	
13	मंगल	3	
14	बुध	4	
15	गुरू	5	होली होलिका प्रदीपनं सूर्यास्तानन्तरं सायं 6 बजके 38 मिनिट के अनन्तर।

वल्लभाब्द 537	**चैत्र (गु. फाल्गुन) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द 2071
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
1	शुक्र	6	इष्टिः। धूलिवन्दन (धुरेण्डी)
2	शनि	7	दोलोत्सव (डोल)
3	रवि	8	द्वितीया पाट।
3	सोम	9	
4	मंगल	10	
5	बुध	11	
6	गुरू	12	
7	शुक्र	13	
8	शनि	14	
9	रवि	15	
10	सोम	16	
12	मंगल	17	पाप मोचिनी एकादशी व्रतम्।
13	बुध	18	
14	गुरू	19	
30	शुक्र	20	वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्।

श्राद्धपक्ष को निर्णय

आश्विन (गु. भाद्रपद) कृष्णपक्ष ।

भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा मंगल को 1 का श्राद्ध, 2 बुध से लेकर 13 रविवार तक सब श्राद्ध तिथि प्रमाणे करने। 13 सोम को 14 का श्राद्ध, 14 मंगल को 30 का श्राद्ध (सर्वपितृ श्राद्ध), आश्विन कृष्ण 30 बुध को मातामह श्राद्ध। जाकी मरण तिथि पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो ।

भाद्रपद की पूर्णिमा श्राद्ध पक्ष में नही है। 5 शनि के दिन भरणी नक्षत्र है तासूं पिण्ड रहित श्राद्ध करिवे सूं गया श्राद्ध जैसो फल लिख्यो है 9 बुध के दिन मातृनवमी के श्राद्ध माता प्रभृति सुवासिनी मृत भई होय तो एवाती सुवासिनी भी अवश्य जिमावनी याही दिन श्राद्ध समय व्यतीतपात भी है तासूं ये दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है तासूं कोई भी तिथि को श्राद्ध रही गयो होय या रहि जायवे को संभव होय तो इन दिनन में श्राद्ध करनो। 12 शनि के दिन सन्यासीन को महालय श्राद्ध 13 रवि व 13 सोम श्राद्ध समय मघा नक्षत्र भी है तासूं मघा निमित्त श्राद्ध अवश्य करनो चाहिए। जो न बन सके तो सर्व पितृगण के नामोच्चारण पूर्वक एक संकल्प करके ब्राह्मण भोजन अवश्य ही करवानो। क्योंकि जो श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन कछु भी न करें ता कूं दोष लिख्यो है।

13 सोम कूं चतुर्दशी निमित्तक घायलन के श्राद्ध, जल शास्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही या दिन श्राद्ध, जाकी मरण तिथि चतुर्दशी होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या व्यतीपात या मे सूं कोई भी दिन में करनो । 14 मंगल कूं सर्वपितृ अमावस्या तथा आश्विन कृष्ण 30 बुध कूं मातामह श्राद्ध ।

श्राद्धपक्ष को संकल्प

ऊँ विष्णुः 3 श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशति तम कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जंबूद्वीपे भारत वर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे प्लवंग नाम्नि एकसप्ततिः अधिक द्विसहस्त्र संख्याके वैक्रमाब्दे शकानुसारेण जयनाम संवत्सरे दक्षिणायने शरदृतौ आश्विन मासे (गुर्जर भाद्रपद मासे) कृष्णपक्षे अमुक तिथौ वासरान्वितायां नक्षत्र योगे–करणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, सिंह राशि स्थिते सूर्ये (नवमी बुध के श्राद्ध सूं कन्या राशि स्थिते श्रीसूर्ये ऐसो कहनो) कर्क राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थानस्थितेषु सत्स्वेवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम (नाम सम्बन्धोच्चारणं) एतेषां यथानाम् गौत्र रूपाणां पुरुष विषये सपत्नीकानां स्त्री विषये सभर्तृक सापत्या विधिनामहालयापर पक्ष श्राद्धमथवा सकृन्महालया पर पक्ष श्राद्ध सदैवं सद्यः करिष्येः

इति श्राद्ध पक्ष निर्णय समाप्त।

श्री महाप्रभु जी के उपदेश

1. अपने दोषों का परिज्ञान भगवत्कृपा से ही होता है।
2. स्वधर्म के पालन से एवं भगवद्भक्ति करने से ही जीव महान बन सकता है अन्यथा नहीं।
3. सब कुछ भगवान के ही अधीन है अतः वे जैसा करेंगे वैसा ही होगा इसलिये उन्ही का आश्रय दृढ रखना चाहिये।

।।श्रीहरिः।।

पुष्टिमार्ग और उसकी विशेषता।

यद्यपि लोक में ज्ञान—कर्म और शक्ति ये तीनमार्ग अत्यन्त प्रसिद्ध हैं किन्तु गीता भागवत आदि में पुष्टि—प्रवाह और मर्यादा इन तीनों मार्गों का वर्णन है किन्तु इन तीनों मार्गों को आज तक किसीने प्रकट नहीं किये। इन तीनों का प्राकट्य प्रमाण एवं विवेचन के साथ श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभु ने किया। इनका पूर्ण रूप से विवेचन 'पुष्टि—प्रवाह—मर्यादा' नाम के ग्रन्थ में मिलता है। आपश्रीने उसमें बताया है कि जिस प्रकार पुष्टि प्रवाह और मर्यादा ये मार्ग अलग—अलग है उसी प्रकार इन मार्गो के जीव उनके देह उन की कार्य प्रणाली भी भिन्न—भिन्न है तथा फल भी उन के भिन्न—भिन्न ही हैं।

श्रीमद्भागवत में श्रीकपिलदेव जी ने अपनी माता देवहूतिजी से कहा था कि हे माता ! यह भक्तियोग मर्यादा आदि मार्गों के भेद से अनेक प्रकार का है 'भक्तियोग मर्यादा आदि मार्गों के भेद से अनेक प्रकार का है 'भक्तियोगो बहुविधो मार्गैर्भामिनि भाव्यते' इस प्रकार श्रीमद्भागवत के एकादशस्कन्ध में योगेश्वरों ने जहां भक्तों का भेद बताया है वहीं पर भक्ति के भेदों का भी वर्णन किया है, परन्तु श्रीमद्वल्लभाचार्यचरणों ने अपने 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा' ग्रन्थ में 'भक्तिमार्गस्य कथानात् पुष्टिरस्तीति

निश्चयः' यह कह कर पुष्टि मार्ग की सत्ता का दृढ़ता के साथ प्रतिपादन किया है। उनका आशय यह है कि श्री भागवत में कपिलदेव जी ने एवं योगेश्वरोंने जो भक्ति के प्रकार बतलाये हैं उनमें शुद्ध पुष्टि भक्ति का लक्षण न होने से उसे शुद्धपुष्टि नहीं कह सकते। अतः आपने शुद्धपुष्टि का लक्षण बताने के लिए नारदपञ्चरात्र के भक्ति के लक्षण को उद्धृत किया है। 'माहात्म्यज्ञानपूर्वक सृदृढ सबसे अधिक स्नेह को भक्ति कहते हैं। माहात्म्यज्ञानपूर्वस्तु सृदृढः सर्वतोऽधिकः। स्नेहो भक्तिरिति प्रोक्तस्तया मुक्तिर्नचान्यथा।।' वास्तव में देखा जाय तो भक्ति का लक्षण इतना बड़ा नहीं है मुख्य लक्षण तो 'स्नेहो भक्तिः' इतना ही है। परन्तु माहात्म्यज्ञानपूर्वक ऐसा जो स्नेह का विशेषण बताया है उसका अभिप्राय तो यह है कि श्रीमदाचार्यचरणों द्वारा प्रकटित भक्तिमार्ग में जो प्रवृत्त होता है उसका भगवान् में जब तक सृदृढ़ और सबसे अधिक स्नेह नहीं होता तब तक सेवा आदि के करने में कहीं अपराध न बन जाय इसके लिये भगवान् के माहात्म्य ज्ञान का उपयोग होता है। जब सुदृढ़ स्नेह उत्पन्न हो जाता है तब तो वह माहात्म्य ज्ञान अपने आप निवृत्त हो जाता है। अत एव पूर्णरूप से माहात्म्य के ज्ञान वाली माता श्रीदेवकीजी में जिस समय शुद्धपुष्टिमार्गीय स्नेह उत्पन्न होगया उस समय भगवान् का माहात्म्य तिरोहित होगया (छिपगया) अतः भगवान् से कहने लगी। हे भगवान् ! मैं आपके कारण अधीरबृद्धि हो

गयी हूँ और कंस से डर रही हूँ। 'समुद्विजे भवद्धेतोः कंसादहमधीरध्ीः' ऐसा बोली। यदि देवकीजी में स्नेह की उत्पत्ति के अनन्तर भी भगवान् के माहात्म्य का ज्ञान बना रहता तो उसे भय क्यों लगता भगवान् के सामने कंस क्या था।

इसी प्रकार वहीं व्रज के अन्दर जिनका सुदृढ़ स्नेह हो गया ऐसे व्रजवासियों ने सात वर्ष की अवस्था वाले भगवान् को जो किसी से उठ नहीं सकता ऐसे गोवर्द्धन पर्वत को उठा कर उसके द्वारा भूख प्यास और निद्रा आदि असह्य शरीर धर्मों की की निवृत्ति पूर्वक सपरिकर व्रज की रक्षा की और अपने आत्मयोग के प्रभाव से गोवर्धन के ऊपर बैठे हुए पशु पक्षी आदि की रक्षा की इस असाधारण माहात्म्य को देखने के अनन्तर भी जिस समय वृष्टि निवृत हो गयी उस समय उन व्रजवासियों को गोवर्द्धन से बाहर निकाला और गोवर्द्धन जाहँ पूर्व में था वहीं रख दिया। उस समय बाहर आते ही दृढ़ स्नेह के कारण प्रत्यक्ष देखे हुए भगवान् के माहात्म्य को तो भूल गये और उन व्रजवासियों ने भगवान् के दहि का तिलक कर उसके ऊपर अक्षत चढ़ाये तथा जलके पात्र को घुमाकर उस जल के पीने के अनन्तर भगवान् को आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार उनने स्नेह ही का कार्य किया यदि स्नेह के

अनन्तर भी माहात्म्यज्ञान उनमें बना रहता है तो वह भगवान् की प्रार्थना एवं उन्हें नमन करते, इसी को वहाँ कहा है 'तं प्रेमवेगान्नि – भृता व्रजौकसः' इसलिये जब तक सुदृढ़ स्नेह उत्पन्न नहीं होता तभी तक माहात्म्यान का उपयोग होता है। सुदृढ़ स्नेह की उत्पत्ति के अनन्तर माहात्म्यज्ञान का कोई उपयोग नहीं रहता।

इसी बात को भक्तिमीमांक्षा में कहा है । वहां पहले तो 'अथातो भक्ति जिज्ञासा' ऐसा कह कर कहा है 'सा परानुरक्तिरीश्वरे' ईश्वर में सबसे अधिक स्नेह को भक्ति कहते हैं। वहां यह नहीं कहा कि पहले भक्ति में माहात्म्यज्ञान का होना आवश्यक है। जहाँ परम अनुराग हो जाता है वहाँ परम अनुराग की ही सब प्रकार के प्रबलता रहती है उस अनुराग में माहात्म्यज्ञान का होना आवश्यक नहीं है। इसीलिये तो श्रीगोकुल में मिट्टी खाने का प्रसंग जब आता है वहाँ जब भगवान् अपना मुँह खोलते हैं उस समय श्रीयशोदाजी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का दर्शन भगवान् के मुख में करती है उससे उन्हें भगवान् के माहात्म्य का पूर्ण रूप से ज्ञान हो जाता है तथापि परम अनुराग के कारण वह माहात्म्य छिप जाता है पुत्रभाव ही वहां प्रकट रहता है। इसीलिये 'माहात्म्यज्ञान आदि उपाधि से रहित साक्षात् धर्मी में ही सुदृढ़ सबसे अधिक जो ज्ञान आदि से हटाया ना जा सके ऐसा अगणित आनन्दरूप अतुल्यातिशय

ऐसा जो स्नेह है वह भक्ति है' यह भक्ति का वास्तविक लक्षण है। इस प्रकार के भक्ति मार्ग का जब प्रमाण पूर्वक निरूपण मिलता है। इससे पुष्टिमार्ग भी है ऐसा निश्चित होता है। इसीलिये तो श्रीगोकुल में गोवर्द्धन धारण के प्रस्ताव में भगवान् ने यह प्रतिज्ञा की कि जिनने मेरी शरण ग्रहण कर ली है जो मुझे ही अपना स्वामी मानते हैं उन मेरे आत्मीयों की रक्षा केवल मैं ही करता हूँ। तस्मान्मच्छरणं गोष्ठं मन्नाथ मत्परिग्रहण गोपापे स्वात्मयोगेन' ऐसी प्रतिज्ञा कर सात दिन तक गोवर्द्धन को धारण किया।

सात दिन तक धारण करने का अभिप्राय यह था कि लोको में जीवो के रक्षक देवता, ऋषि, पितर, आत्मा, आत्मीय, ऐहिक और पारलौकिक ये सात प्रसिद्ध है, इन सातों की रक्षा से उन्हें हटाकर उनमें अपना सम्बन्ध स्थापित कर रक्षा की। अतः जिनको प्रभु अपना आत्मीय समझते हैं और जिनकी रक्षा आदि सब कार्य स्वयं प्रभु ही करते हैं यह ही पुष्टि का स्वरूप है इसे बताने के लिए आचार्यचरणों ने कहा है 'पुष्टिरस्तीति निश्चयः'। तात्पर्य यह है कि पुष्टि में भगवान् और भक्त आपस में संबंधी बन जाते हैं।

पुष्टिमार्गीय भक्त की पहचान क्या है इस विषय में श्रीहरिराय महाप्रभु ने अपने 'पुष्टिमार्ग लक्षणानि' ग्रन्थ में उनका परिचय दिया है।

उस ग्रन्थ में 20 श्लोक हैं। उनमें से कुछ श्लोकों का आशय यहां लिखा जाता है – 'फल की प्राप्ति में सब प्रकार के साधनों से रहित होना ही जहाँ साधन है उसे पुष्टि मार्ग कहते हैं' 'जहां भगवान् के अनुग्रह से ही लौकिक एवं परलौकिक फल की सिद्धि हो उसे पुष्टिमार्ग कहते हैं' 'जहां जीव के अंगीकार में योग्यता नहीं देखी जाती है वह पुष्टिमार्ग कहा जाता है' 'पुष्टिमार्गीय भक्त को लौकिक या वैदिक किसी सुख की अपेक्षा नहीं होती उसे तो केबल अपने स्वामी (श्रीभगवान्) के ही सुख की अपेक्षा होती है वह पुष्टिमार्ग है' 'जो भगवान् के भक्त हैं उनमें भगवद्भाव होना और भगवान् के विरोधियों को अपना विरोधी समझना' उदासीनों में समता रखना पुष्टिमार्ग कहलाता है। इस मार्ग की पूर्ण जानकारी तो साम्प्रदायिक ग्रन्थों के अध्ययन से ही प्राप्त हो सकती है। यहां तो केवल उसका दिग्दर्शन मात्र कराया है प्रवाह मार्ग क्या है मर्यादामार्ग क्या है उनमें कितने प्रकार के भेद होते है यह सब तो अध्ययन से ही ज्ञात हो सकेगा। इतिशम्।

लेखक :

त्रिपाठी यदुनन्दन नारायण जी शास्त्री

विद्याविभागाध्यक्ष

विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा (राज.)

वर्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरमासानुसार सूचना

श्री नाथद्वारा

फाल्गुन शु. 7
गोस्वामि तिलकायित श्री 108
श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) महाराज
श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) के लालजी 1
मार्ग. कृ. 30 चि. गो. श्री भूपेशकुमारजी
(श्री विशाल बावा)

आषा. कृ. 13 गो. कल्याणरायजी
गो. कल्याणरायजी के लालजी 2

पौ.कृ. 6 चि. श्रीहरिरायजी

अश्विन शु. 9 चि. श्रीवागधीशजी

चि. हरिरायजी के लालजी 2
माघ शु. 13 चि. श्री वदान्य राय जी
(श्री गिरधर जी)

फा. शु. 3 चि. द्विजराज जी

पौष शु. 5 गो. श्री गोकुलोत्सवजी
श्रीगोकुलोत्सवजी के लालजी 1

फा.शु. 4 चि. श्री अभिनवाचार्यजी
(श्रीव्रजोत्सवजी)

चि. अभिनवाचार्य जी के लालजी 1

वै.शु. 12 चि. व्रजेश्वरजी (श्रीउमंगजी)

वै.कृ. 4 गो. दिव्येशजी

कांकरोली

पौ.शु. 10 गो. श्रीवृजेशकुमारजी

चै.कृ. 4 गो. पीताम्बरजी

वै.कृ. 6 गो. त्रिलोकीभूषणजी

श्रीव्रजेशकुमारजी के लालजी 2
ज्ये.शु. 5 चि. पुरूषोत्तमजी

फा.कृ. 4 चि. द्वारकेशजी

श्रीपीताम्बरजी के लालजी 1
ज्ये. शु 14 चि. व्रजालंकारजी

गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी 1
वै.कृ. 13 गो. चि. व्रजाभरणजी

श्रीपुरूषोत्तमजी के लालजी 2
का. कृ. 9 गो. श्रीव्रजभूषणजी

का. शु. 10 गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी

आ.शु.

चि.व्रजाभरण जी के लालजी 1
भा. शु. 2 चि. रणछोड़ राय जी

आ. सु. 9 गो. रविकुमारजी
गो. रविकुमारजी के लालजी 2

श्रा. 30 चि. अवतंस बावा
(मधुरम जी)

माघ व. 4 चि. प्रियम बावा

कोटा–बम्बई जतीपुरा

ज्ये. कृ 6 गो. लालमणीजी
लालमणीजी के लालजी 2

श्रा.शु. 9 चि. गो. श्रीप्रभुजी
(मिलनकुमारजी)

चै. शु. 9 चि. द्वारकेशलालजी

श्री मिलनकुमारजी के लालजी 1
श्रा.कृ.2 चि. रणछोड़ लालजी
(कृष्णास्थ बावा)

कोटा–कड़ी

चै.शु. 10 गो. गोपाललालजी

गोविन्दरायजी के लालजी

भा.कृ. 9 चि. व्रजेशकुमारजी

माघ.व. 10 गो. चि. घनश्यामलालजी

आसो. सु. 10 गो. दामोदरलालजी

चै. व. 12 गो. चि. वल्लभलालजी
गो. वल्लभलालजी के लालजी 1

आषा. सु. 8 चि. पुरूषोत्तमजी

घनश्यामलालजी के लालजी 2

फा.शु. 7 गो.चि. कृष्णकुमारजी
गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी 1

पौ.व. 11 गो.चि. व्रजपाललालजी

फा.शु. 11 चि. कुंजेशकुमारजी
गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी 2

मार्ग.व. 2 गो.चि. गोविन्दरायजी

आश्वि.व. 3 गो.चि. गोकुलमणीजी

गो. गोपाललाजी के लालजी 2
आसो. व. 3 चि. विनयकुमारजी

आषा. व. 4 चि. शरदकुमारजी

श्रा.सु. 7 गो. त्रिलोकीभूषणजी
त्रिलोकीभूषणजी के लालजी 1

ज्ये.कृ. 1 राजीवलोचनजी

व्रजेशकुमारजी के लालजी 3

चै.शु. 6 चि यदुनाथजी

चि. यदुनाथजी के लालजी 1
पौ.कृ. 5 चि. प्रद्युम्नजी

कार्ति. सु. 10 चि. द्वारकेशजी

कार्ति सु. 7 चि. जयदेवजी
चि. जयदेवजी के लालजी 1

मार्ग कृ. 13 चि. व्रजराजजी

चि. दामोदरलालजी के लालजी 2
श्रा. व. 12 चि. हरिरायजी

ज्ये.व. 10 चि दर्शन कुमारजी

चि. दर्शनकुमार जी के लालजी 1
ज्ये. व. 4 चि. व्रजाधीश जी

कामवन

फा. सु. 2 गो. श्री वल्लभलालजी
गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी 2

भा. कृ. 2 चि. श्री देवकीनंदनजी

श्रा. कृ. 10 चि. श्री विठ्ठलनाथजी

कामवन/सूरत

आ. कृ. 14 गो. श्री द्वारकेशलालजी
गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी 2

फा. शु. 3 चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रा. कृ. 13 चि. श्री कन्हैयालालजी

च. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी 2
भा. कृ. 4 चि. श्री गोविन्दजी

का. शु. 7 चि. श्री गोकुलचन्द्र जी

चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी 1
का. शु. 10 चि. श्री जयदेवजी

कामनवन/भावनगर

भा. शु. 1 गो. श्री नवनीतलालजी

गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी 1
का. शु. 1 चि. श्री गोकुलेशजी

कामवन/घाटकोपर

का. कृ. 11 गो. मुरलीधर जी
गो. मुरलीधरलालजी के लालजी 1

मार्ग. शु. 4 चि. श्री जयदेवलालजी

चै. कृ. 13 गो. श्री रघुनाथलालजी
गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी 2

मार्ग. शु. 9 चि. श्री गिरधरजी

श्रा. कृ. 5 चि. श्री दामोदर जी,

कामवन

माघ. सु. 13 गो. घनश्यामजी

चै. सु. 15 गो. रघुनाथलालजी (गोकुल–मुम्बई)
गो. घनश्यामजी के लालजी 3

आष.सु. 11 चि. ब्रजेशकुमारजी

श्रा. व. 3 चि. गोपाललालजी

आसो. व 12 चि. कल्याणरायजी

गो. रघुनाथजी के लालजी 1

माघ. सु. 4 चि. योगेशकुमारजी
चि. योगेशकुमारजी के लालजी 2

आ. व. 13 चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रा. कृ. 30 चि. ब्रजपालजी (मुदितजी)

भा.सु. 14 गो. शिशिरकुमारजी

गो. चि. गोपालजी के लालजी 1
आसो. व. 4 चि. लालजी

गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी 2
श्रा. व. 3 गो. चि. अनिरूद्धजी

भा. व. 1 गो. चि. उपेन्द्रजी

चि. अनिरूद्धजी के लाल जी 1
फा. कृ. 6 चि. रमणजी (रसेश जी)

गोकुल

का. व. 10 गो. देवकीनन्दनजी
गो. देवकीनन्दन के लालजी 2

मा. व. 30 चि. वल्लभलालजी

का. सु. 2 चि. विट्ठलनाथजी

वीरमगाम

आसो. व. 14 गो. जयदेवलालजी
गो. जयदेवलालजी के लालजी 3

ज्ये. सु. 1 चि. मथुरेशजी
चि. मथुरेशजी के लालजी 1
आसो. व. 14 चि. रघुनाथ जी

आसो. व. 9 चि. ब्रजेशकुमारजी
चि. ब्रजेशकुमार जी के लालजी 1
माघ व. 6 चि. रसिकप्रितमजी

चि. कन्हैयालालजी के लालजी 1
श्रा. व. 8 चि. श्रीगोकुलेशजी

सूरत

माघ. व 5 गो. कल्याणरायजी

मार्ग. सु. 11 गो. वल्लभलालजी

आषा. व. 4 गो. गोपेश्वरजी

पौ. व. 3 गो. मुकुन्दरायजी

गो. वल्लभलालजी के लालजी 1
आसो. व. 1 चि. अनुरागजी

गो. गोपेश्वरजी के लाल जी 1

फाल्गु. व 9 चि. वत्सलराजजी

चि. अनुरागरायजी के लालजी 1

आसो. व. 7 चि. पुरूषोत्तमरायजी

बड़ोदरा, सूरत

चै. सु. 11 गो. मथुरेशजी

भा.व. 4 गो. चन्द्रगोपालजी

पौ. व. 5 गो. प्रभुजी

गो. मथुरेशजी के लालजी 2
भा.सु. 6 चि. योगेशकुमारजी

भा.व. 2 चि. द्रुमिलकुमारजी
गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी 1

चि. व्रजराजकुमारजी

चापासेनी–जामनगर–नडियाद

मा. व. 3 गो. विट्ठलनाथजी

ज्ये. सु. 5 गो. हरिरायजी

फा. व. 14 गो. व्रजरत्नजी

पौष सु. 9 गो. नवनीतरायजी

आष. सु. गो. बालकृष्णजी

गो. चि. विट्ठलेशरायजी के लालजी 3

आषा. सु. 15 चि. मुकुट बावा

फा. व. 12 चि. शरदकुमारजी

फा. सु. 15 चि. उत्सवजी

चि. हरिरायजी के लालजी 1
का. व. 12 चि. व्रजवल्लभजी

गो. व्रजरत्नजी के लालजी 1
अश्वि. सु. 7 चि. गोकुलोत्सवजी

गो. नवनीतलालजी के लालजी 1
ज्ये. सु. 10 चि. अंजनरायजी

बालकृष्णजी के लालजी 1
पौ. सु. 1 चि. प्रियांकजी

मथुरा

पौ. व. 6 गो. प्राणवल्लभजी

गो.प्राणवल्लभलालजी के लालजी 2
का. शुक्ल 11 चि. व्रजवल्लभजी
चै. वदी 11 चि. जयवल्लभ जी
चि. व्रजवल्लभजी के लालजी 1
वै. कृ. 11 चि. कृतार्थ बावा
भा. सुदी 5 गो. रसिकवल्लभजी
गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी 2
मृग शुक्ल 5 चि. समर्पण बावा
आ. सु. 6 चि. प्रागट्य कुमार जी
का. सु. 9 गो. अक्षयकुमारजी
आषा. सु. 14 गो. शरदकुमारजी
गो. शरदकुमारजी के लालजी 3
माघ. व 9 चि. गोपाललालजी
का.सु. 5 चि. व्रजभूषणलालजी
ज्ये. सु. 11 गो. प्रबोधकुमारजी
गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी 1
भा. सु. 4 चि. रत्नेशकुमारजी
चि. प्रबोधकुमारजी के लालजी 1
भा. सु. 8 चि. अभिषेक बावा
मार्ग. व. 2 गो. संदीपकुमारजी
पौ. सु. 9 गो. संजयकुमार जी
गो. अक्षयकुमारजी के लालजी 3
आसो. सु. 1 चि. प्रणयकुमारजी
प्रणयकुमारजी के लालजी 2
फा.शु. 12 गो.चि. श्रीअलंकारजी
फा.शु. 7 गो.चि. वृजरायजी
पौ. व. 6 चि. परितोषकुमारजी
मार्ग. व. 8 चि. पंकजकुमारजी

वाराणसी

मार्ग. सु. 2 श्याम मनोहरजी
गो. श्याममनोहरजी के लालजी 1
मार्ग. कृ. 6 गो. चि. प्रियेन्दु बावा

अहमदाबाद

का.सु. 12 चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी 2
आसो. व. 10 चि. मधुसूदनलालजी
(तिलक बावा)
आश्वि. शु. 1 गो.चि. रणछोड़लालजी

(आभरण बावा)

गो.चि. मधुसूदनलालजी
(तिलक बावा) के लालजी 2

ज्ये.सु. 2 गो. चि. व्रजरायजी
(निवेदन बावा)

आ.व.10 गो.चि. व्रजेश्वरजी
(आभुषणजी बावा)

मुम्बई

ज्ये. व. 6 गो. श्याममनोहरजी

आ. सु. 5 गो. मनमथराय जी

गो. गोपीनाथजी के लालजी 2
का. व. 13 चि. रमेशचन्द्रजी
माघ. सु. 6 चि. अनिरूद्धलालजी
(श्रीराजकुमारजी)

चि. रमेशचन्द्रजी के लालजी 1
माघ. व. 6 गो. रघुनाथजी

गो. रघुनाथजी के लालजी 2
भा. सु. 5 चि. गोपीनाथजी दिक्षीत जी
(गो. राहुल जी)

मार्ग. सु. 2 चि. नागरमोहनजी
(चि. निवेद जी)

चि. अनिरूद्धजी के लालजी 2
माघ. व. 9 चि. यदुनाथजी

फा. सु. 15 चि. गोकुलनाथजी

गो. माधवरायजी के लालजी 1
मार्ग. व. 6 चि. नीरजकुमारजी

चि. नीरजकुमारजी के लालजी 1
वै. व. 14 चि. गोविन्दरायजी

गो. कृष्णजीवनजी के लालजी 5
आसो. सु. 7 गो. हरिरायजी

पौ. व. 4 गो. मधूसुदन जी

फा. सु. 13 गो. मुरलीमनोहरजी

आषा. सु. 2 गो. कृष्णकान्तजी

चि. कृष्णकान्त जी के लालजी 1
श्रा. शु. 11 चि. गिरिधरलालजी

चै.सु. 14 गो. पुरूषोत्तमलालजी
गो. पुरूषोत्तमलालजी के लालजी 2

मार्ग. सु. 4 चि. गोकुलनाथजी

आषा. सु. 11 चि. ललितत्रिभंगीजी

चि. ललितत्रिभंगीजी के लालजी 1
फा. सु. 8 चि. व्रजवल्लभलालजी

गो. हरिरायजी के लालजी 2
मार्ग व 4 चि. हृषीकेशजी

चि. हृषीकेशजी के लालजी 2
आसो. सु. 1 चि. राजीवलोचनजी

वै.सु. 7 रविरायजी

गो. द्वारकाधीशजी के लालजी 2
वै. व. 4 चि. योगेशकुमारजी

चि. योगेशकुमारजी के लालजी 1
भा. व. 30 चि. बालकृष्णलालजी
(मिथिलेशकुमारजी)

आसो. व. 4 चि. कमलेशकुमारजी
चि. कमलेशकुमारजी के लालजी 1

फा. कृ. 9 चि. मुकुन्दरायजी

आसो. सु. 1 गो. मनमोहनजी
मनमोहनजी के लालजी 1

आ. व. 14 गो. चि. प्रियव्रतरायजी

आषा. 30 गो. हिरण्यगर्भजी
गो. हिरण्यगर्भजी के लाल जी 1

आ. कृ. 11 चि. हैयंगवीनजी

गो. मधुदसूदनजी के लालजी 2

चै.सु. 10 चि. कृष्णचन्द्रजी

पौ. व. 5 चि. वल्लभदीक्षितजी

गो. मुरलीमनोहरजी के लालजी 1

आसो. सु. 11 चि. गोपिकालंकारजी

कान्दीवली–मुम्बई

ज्ये. सु. 2 गो. द्वारकेशलालजी

कार्ति. सु. 7 गो. पुरूषोत्तमजी

मुम्बई विलेपार्ले

आसो. सु. 3 गो. रसिकवल्लभजी

चैत्र सुदि 9 गो. महेन्द्रकुमारजी

गो. रसिकवल्लभजी के लालजी 1

आसो. सु. 13 चि. शिशिरकुमारजी
चि. शिशिरकुमारजी के लालजी 1

पौ. कृ. 5 चि. मुरलीमनोहरजी

मुम्बई–वेरावल–पोरबन्दर

माघ. सु. 8 गो. माधवरायजी

मार्ग. सु. 9 गो. चन्द्रगोपालजी
गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी 1

श्रा. कृ. 9 चि. अनिरूद्धलालजी

आसो. व. 14 गो. शैलेशकुमारजी
श्रीशैलेशकुमारजी के लालजी 1

श्रा. सु. 3 चि. लाडिलेशजी

गो. माधवरायजी के लालजी 1
आषा. व. 4 चि. मुरलीधरजी

बोरीवली–जामखंभालिया

पौ. सु. 13 गो. वल्लभलालजी

श्रा. व. 13 गो. राकेशकुमारजी

गो. मुरलीधरजी के लालजी 3
का. व. 13 गो. त्रिभंगीलालजी

चै. व. 11 गो. व्रजप्रियजी

चै. व. 14 गो. यशोदानन्दन जी

गो. यशोदानन्दन जी के लालजी 1
माघ व. 10 चि. व्रजनाथलालजी
(श्री नुपुर कुमार जी)

गो. वल्लभलालजी के लालजी 3
वै. सु. 13 चि. राजीवलोचनजी

मार्ग. सु. 2 चि. गोविन्दरायजी

चि. गोविन्दरायजी के लालजी 1
श्रा. सु. 2 चि. मधुसूदन जी
(चि. रूचिरबाबा)

ज्ये. सु. 15 चि. गोपिकालंकारजी
चि. गोपिकालंकारजी के लालजी 1

फा. सु. 2 चि. गो. द्वारकेशलालजी

गो. राजीवलोचनजी के लालजी 3

आषा. व. 5 चि. देवकीनन्दनजी
(भागवतकुमारजी)

चि. देवकीनन्दनजी के लालजी 1

चै.व. 11 चि. गो. श्री दीक्षितजी
(चि. वेदांग बावा)

ज्ये. सु. 4 चि. कुंजरायजी
(योगीन्द्रकुमारजी)

श्रा. कृ. 3 चि. गो. गिरिधरजी

गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी 1
का. सु. 3 चि. यमुनेशकुमारजी

जूनागढ

श्रा. व. 3 गो. दानीरायजी
गो. दानीरायजी के लालजी 4

श्रा. सु. 12 चि. गोकुलेशजी

का. सु. 5 चि. पुरूषोत्तमजी

आषा. सु. 11 चि. व्रजेन्द्रकुमारजी

चि. व्रजेन्द्रकुमारजी लालजी 2

भा.व. 1 चि. ब्रजनाथजी
(चि. शशांक बावा)

आश्वि. व. 13 चि. मधुरेशजी
(चि. मृदुल बावा)

का. शु. 15 चि. विशालकुमारजी

पूना–मद्रास

चै. सु. 4 गो. अजयकुमारजी
गो. अजयकुमारजी के लालजी 1

भा. कृ. 6 चि. वागधीशकुमारजी

फा. व. 11 गो. भरतकुमारजी
गो. भरतकुमारजी के लालजी 1

वै. व. 2 चि. यशोवर्द्धन जी

मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै सु 14 गो. रणछोड़लालजी (राजकोट)

गो. रणछोड़लालजी के लालजी 1

फा. कृ. 13 चि. गोकुलनाथजी

माघ. व. 9 गो. अनिरूद्धलालजी
गो. अनिरूद्धजी के लालजी 1

वै. सु. 14 चि. रसिकरायजी (शरदजी)
चि. रसिकरायजी के लालजी 1

श्रा. कृ. 7 चि. अचिन्त्य जी

आषा. सु 8 गो. चिमनलालजी (गोकुल)
गो. चिमनलालजी के लालजी 2

आ. कृ. 6 चि. चन्द्रगोपालजी (पंकज बावा)

का. सु. 4 चि. भूषणजी

चि. चन्द्रगोपालजी के लालजी 2
का. सु. 12 चि. अन्वयजी

श्रा. सु. 5 चि. प्रत्यय जी

चि. भूषणजी के लालजी 2
फा. कृ. 3 चि. अव्ययजी

का. सु. 8 चि. गोपालजी

वै. सु. 6 गो. किशोर चन्द्रजी (जूनागढ)
गो. किशोरचन्द्रजी के लालजी 1

का. व. 4 चि. व्रजेन्द्रजी (पीयूष बावा)
चि. व्रजेन्द्रजी के लालजी 2

का. कृ. 2 चि. व्रजवल्लभजी

पौ. कृ. 7 चि. पुण्यश्लोकजी

पौ. सु. 12 गो. विट्ठलनाथजी (मुम्बई)

आश्विन कृ. 7 गो. श्री सारंगजी (बडोदरा)
गो. श्री सारंगजी के लालजी 1

फा.सु. 14 चि. घनश्यामलालजी (उत्सव बावा)

पोरबन्दर

वै. सु. 7 गो. हरिरायजी
हरिरायजी के लालजी 1

मा. शु. 11 चि. जयगोपालजी

मथुरा–पोरबन्दर

मार्ग. व. 10 गो. रसिकरायजी

आ. सु. 12 गो. मथुरेशकुमारजी

आसो. व 10 गो. कन्हैयालालजी

पौ.सु.9 गो.जयदेवलालजी

गो. रसिकरायजी के लालजी 2
वै. व. 10 चि. चन्द्रगोपालजी

वै. व. 7 चि. शरदकुमारजी

गो. मथुरेशकुमारजी के लालजी 2
माघ. व. 12 चि. वसन्तकुमारजी

का. सु. 6 चि. विशालकुमारजी

चि. वसन्तकुमारजी के लालजी 1

भा. व. 12 चि. श्रीकृष्णरायजी

गो. कन्हैयालालजी के लालजी 2
फा. कृ. 5 चि. अभिषेककुमारजी

वै. शु. 3 चि. अक्षयकुमारजी

गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी 1
आषा. सु. 7 चि. मिलनकुमारजी

चि. मिलनकुमारजी के लालजी 1
मार्ग शु. 8 चि. गोकुलनाथजी

लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की सूचना

वै. सु. 3 श्रीदेवकीनन्दनजी कामवन
वै. व. 11 श्रीदेवकीनन्दनजी इन्दौर
वै. व. 12 श्रीदीक्षितजी बम्बई
वै. व. 14 श्रीविट्ठलेशरायजी पोर.
ज्ये. सु. 9 श्रीगिरधरजी कोटा
जये. सु. 12 श्रीद्वारकेशलालजी कोटा
ज्ये. सु. 15 श्रीजीवनलालजी काशी
ज्ये. व. 8 श्रीघनश्यामलालजी मांडवी
ज्ये. व. 14 श्रीवागधीशजी अमरेली
आ. सु. 3 श्रीवल्लभलालजी कामवन
भा. सु. 7 श्रीव्रजरत्नलालजी सूरत
फा. शु. 15 श्रीमाधवरायजी पोर.
का. व. 7 श्रीगोविन्दलालजी नाथद्वारा
आ. व. 8 श्रीघनश्यामलालजी कामवन
आ. व. 12 श्रीविट्ठलेशरायजी बम्बई
वै. व. 1 श्रीद्वारकेशजी पोरबन्दर
आ. व. 1 श्रीगोकुलेशरायजी जूनागढ़
आ. व. 8 श्रीयदुनाथजी सूरत
आ. व. 10 श्रीव्रजरत्नलालजी नडियाद
आ. व. 13 श्रीबालकृष्णजी कांकरोली
आ. व. 13 श्रीकृष्णरायजी इन्दौर

आ. व. 13 श्रीगोकुलेशजी बम्बई
आ. सु. 3 श्रीदामोदरलालजी चापां
भा. वं. 1 श्रीगोवर्द्धनलालजी नाथद्वारा
माघ व. 2 श्रीव्रजभूषणलालजी कांक
फा. व. 5 श्रीचिम्मनलाल जी बम्बई
मा. व. 30 श्रीगोविन्दरायजी पोर.
मा. कृ. 1 श्रीदाऊजी (राजीवजी) नाथद्वारा
श्रा. व. 14 श्रीगोपाललालजी कांकरोली
भा. व. 8 श्रीमुरलीधरजी बेटद्वार
श्रा. व. 8 श्रीकन्हैयालालजी गोकुल
भा. व. 10 श्रीव्रजनाथजी विलेपार्ले
का. सु. 14 श्रीजीवनलालजी कोटा
भा. व. 7 श्रीवल्लभलालजी बड़ौदा
भा. व. 8 श्रीमुरलीधरजी कोटा
भ. व. 11 श्रीनृसिंहलाल जी शेरगढ़
आ. सु. 13 श्रीरघुनाथजी जूनागढ़
आ. व. 3 श्रीघनश्यामलालजी बम्बई
आ. व. 5 श्रीव्रजनाथजी जामनगर
आ. व. 9 श्रीमगनलालजी सूरत
आ. व. 13 श्रीव्रजपाललालजी मथुरा
का. व. 2 श्रीपुरुषोत्तमलालजी जूना

का. सु. 6 श्रीपुरूषोत्तमलालजी अमरे
का. सु. 7 श्रीलालमणिजी कोटा
का. सु. 8 श्रीगोपाललालजी मथुरा
फा. सु. 8 श्रीरमणजी कामवन
आ. सु. 3 श्रीगोपालालजी कांकरोली
का. व. 14 श्रीजयदेवजी वीरमगाम
मार्ग सु. 13 श्रीगिरधरलालजी नाथ
ज्ये. सु. 5 श्रीजीवनजी बम्बई
ज्ये. सु. 11 श्रीकल्याणरायजी मथुरा
ज्ये. सु. 13 श्रीजीवनलालजी पोर
ज्ये. सु. 14 श्रीद्वारकेशलालजी बम्बई
श्रा. व. 7 श्रीरणछोड़लालजी बम्बई
पौ. सु. 5 श्रीगोपेश्वरलालजी नाथद्वारा
पौ. सु. 6 श्रीदामोदरलालजी नाथद्वारा
पौ. सु. 7 श्रीरणछोड़लालजी कोटा
पौ. व. 11 श्रीरणछोड़लालार्जी राज
पौ. व. 9 श्रीवल्लभलालजी बम्बई
का. सु. 4 श्रीमधुसूदनलालजी अमरे
का. सु. 10 श्रीगोकुलाधीशजी बम्बई
का. सु. 15 श्रीगिरधरलालजी काशी
श्रा. व. 12 श्रीप्रद्युम्नलालजी वेटद्वार
फा. सु. 3 श्रीगिरधरजी सूरत
फा. सु. 11 श्रीगोविन्दरायजी सूरत

फा. व. 13 श्रीव्रजरायजी अहमदाबाद
श्रा. व. 9 श्रीकृष्णजीवनजी
माघ. व. 2 श्री नटवरलालजी
का. सु. 1 श्रीरमणलालजी मथुरा
श्रा. सु. 12 श्रीविट्ठलेशरायजी चापा
श्रा. सु. 30 श्रीकन्हैयालालजी बम्बई
भा. सु. 12 श्रीगोकुलनाथजी बम्बई
भा. सु 12 श्रीअनिरूद्धलालजी नडियाद
भा. व. 3 श्रीगोवर्द्धनलालजी बम्बई
भा. व. 3 श्रीदामोदरलालजी मथुरा
भा. व. 7 श्रीघनश्यामलालजी सूरत
वै. कृ. 5 श्रीरणछोड़लालजी कोटा
ज्ये. व. 12 श्रीब्रजरमणलालजी मथुरा
भा. कृ. 12 श्रीगोविन्दरायजी कोटा
का. सु. 13 श्रीगोविन्दरायजी कामवन
पौ. व. 12 श्रीव्रजभूषणलालजी नड़ि
आसो व. 10 श्री व्रजरायजी
(नटवरगोपालजी) अहमदाबाद
श्रा. सु. 11 श्रीगिरधारीलालजी मु.
चै. सु. 15 श्रीमुरलीधरलालजी बोरी.
वै. सु. 11 श्रीयदुनाथरायजी जती.
वै. व. 30 श्रीवागीशरणजी बम्बई
आषा. सु 2 श्रीगोपाललालजी कामवन

आषा. सु. 2 श्रीमगनलालजी वेरावल

श्रा. सु. 2 श्रीवल्लभलालजी बम्बई

श्रा. व. 30 श्रीकन्हैयालालजी बम्बई

भा. सु. 4 श्रीपुरूषोत्तमलालजी चापा

का. सु. 1 श्रीगोवर्द्धनेशजी बम्बई

का. सु. 3 श्रीप्रदीपकुमारजी मथुरा

का. सु. 11 श्रीश्यामसुन्दरजी बम्बई

भा. सु. 10 श्रीदामोदरलालजी बम्बई

भा. सु. 11 श्रीव्रजवल्लभजी जूना

भा. सु. 13 श्रीपुरूषोत्तमलालजी को.

पौ. सु. 4 श्रीगोकुलनाथजी वेरावल

फा. सु. 12 श्रीकाकागिरधरजी नाथ.

भा. सु. 9 श्रीपुरूषोत्तमलालजी चापा

पौ. सु. 10 श्रीकल्याणरायजी बम्बई

चै. सु. 13 श्रीमुरलीधरजी काशी

ज्ये. सु. 4 श्रीत्रिविक्रमरायजी कोटा

आषा. सु. 3 श्रीमथुरेशजी मुम्बई

वै. सु. 15 श्रीमाधवरायजी मुम्बई

भा. व. 1 श्रीमदनमोहनजी मुम्बई

आषा. व. 3 श्रीनटवरगोपालजी (मु.–वेरावल – पोरबन्दर)

ज्ये. व. 4 श्रीगिरधरलालजी कामवन

फा. सु. 14 श्रीमधुसुदनलालजी सूरत

आष.व. 11 श्रीबालकृष्णलालजी सूरत

पौ.व. 9 श्रीविट्ठलनाथजी मथुरा

फा. व. 30 श्रीकृष्णचन्द्रजी मुम्बई

का. सु. 7 श्रीजीवनेशजी मुम्बई

वै. व. 14 श्रीव्रजाधीशजी मुम्बई

आ. सु. 5 श्रीविट्ठलेशरायजी कां. मुम्बई

का. व. 8 श्रीराजेन्द्रकुमारजी मथुरा

आषा. व. 11 श्रीविट्ठलेशरायजी इन्दौर

आसो. सु 11 श्रीकृष्णकुमारजी कामवन

माघ सु. 4 श्रीकृष्णकुमारजी मथुरा

माघ वदी 4 श्रीनृत्यगोपालजी मुम्बई

मार्ग. सु 14 श्रीद्वारकेशलालजी मांडवी

माघ. कृ. 2 श्रीनटवरलालजी मांडवी

वै. सु 10 श्रीमुरलीमनोहरजी बडोदरा

आ. सु 5 श्रीदामोदरलालजी राजकोट

ज्ये. सु 8 श्रीमुकुन्दरायजी राजकोट

वै. सु 9 श्रीयदुनाथजी मथुरा

का.व. 10 उत्तमश्लोकजी मुम्बई

फा.सु. 4 गोकुलनाथजी गोकुल

आषाढ़ व. 8 रसिकरायजी चापासेनी –जामनगर–नडियाद

भा. सु. 8 गो. व्रजजीवनजी – कान्दीवली – मुम्बई

आ.शु 14 गो देवेन्द्रकुमारजी, नाथद्वारा